Public Expenditure &
Growth or Causes Of Public Expenditure

लोक व्यय का अर्थ सरकार द्वारा किए गए खर्च से है। सार्वजनिक व्यय न केवल एक राजकोषीय प्रक्रिया है बल्कि इसका मुख्य उद्देश्य सामाजिक कल्याण के उद्देश्यों की पूर्ति करना है। सार्वजनिक व्यय सार्वजनिक वित्त का महत्वपूर्ण भाग ही नहीं है बल्कि आज यह सार्वजनिक वित्त का केन्द्र-बिन्दु भी बन चुका है।

प्राचीन अर्थशास्त्रियों ने सार्वजनिक व्यय को महत्व नहीं दिया था। प्रो० राबर्ट पील (Robert Peel) ने कहा कि "धन सरकार की अपेक्षा लोगों के हाथों में अधिक कल्याणी सिद्ध हो सकती है।" फलतः सार्वजनिक व्यय का क्षेत्र काफी संकुचित हो गया था। प्राचीन अर्थशास्त्री समझते थे कि सरकार का कार्य-क्षेत्र केवल न्याय, पुलिस तथा सेना तक ही सीमित है वे सार्वजनिक व्यय को अनुत्पादक तथा अपव्ययपूर्ण समझते थे जो व्यक्तिगत स्वतंत्रता को कम कर देता था।

परन्तु 19वीं शताब्दी के अन्त में अर्थशास्त्रियों के विचारों में परिवर्तन आया और वे राजकीय हस्तक्षेप को महत्व देने लगे। समाजवादी विचारधारा, कल्याणकारी राज्यों की स्थापना व लोकतान्त्रिक शासन व्यवस्था के कारण सरकारी हस्तक्षेप और अधिक व्यापक होने लगा। "Wagner महोदय ने "Law of increasing public expenditure" स्थापित किया जिसके अनुसार आज के कल्याणकारी राज्यों में सार्वजनिक व्यय बढ़ते हुए दर से लगातार बढ़ता है। Wagner महोदय के विचार से आज अधिकांश अर्थशास्त्री सहमत हैं। Wagner ने सार्वजनिक व्यय के सिद्धान्त को निम्नलिखित रेखाचित्र से स्पष्ट किया है —

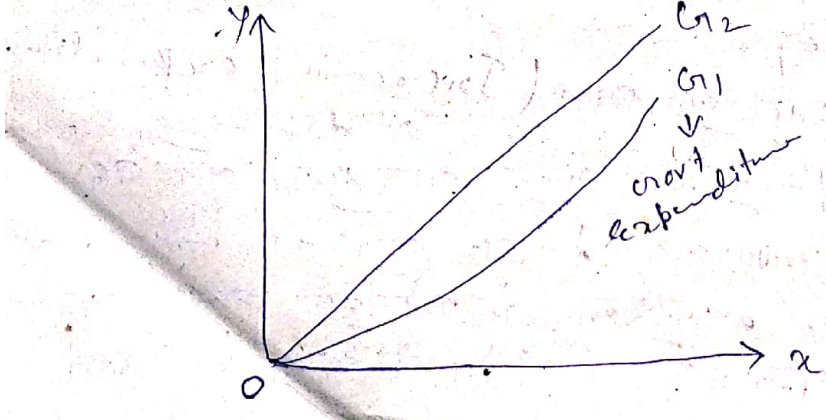

होला कि "Wiseman Peacock" के अनुसार सार्वजनिक व्यय में वृद्धि होती है किन्तु लगातार नहीं। अचानक प्राकृतिक या मानवकृत समस्याओं के कारण सार्वजनिक व्यय में एक उछाल हो जाता है इसलिए सार्वजनिक व्यय की रेखा Continuous नहीं बल्कि Discontinuous होती है जैसा कि नीचे के चित्र में प्रदर्शित है —

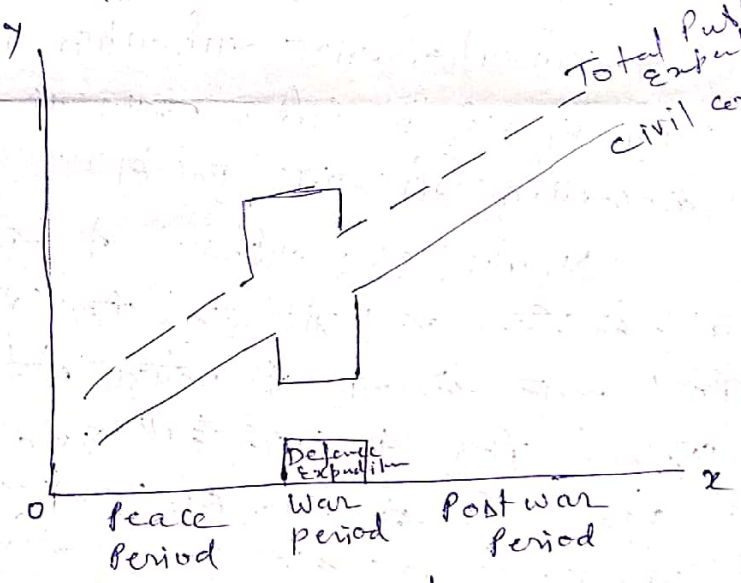

सार्वजनिक व्यय में वृद्धि के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं-

① राज्य कार्यों में वृद्धि (Increase in State activities)
Wagner ने 19 वी शदी के अन्त में "राज्य की क्रियाओं में वृद्धि के नियम" को बताया था जिसके अनुसार "राज्य के कार्यों में व्यापक एवं गहन वृद्धि की एक स्थायी प्रवृत्ति पाई जाती है। राज्य नये-नये कार्यों को निरन्तर अपने हाथ में लेते जा रहे हैं और पुराने कार्यों को और अधिक बड़े पैमाने पर अधिक कुशलता के साथ सम्पन्न कर रहे हैं।" इसप्रकार राज्यों व केन्द्रों के कार्यों में उत्तरोत्तर वृद्धि होती गयी है जिसके परिणामस्वरूप सार्वजनिक व्यय में वृद्धि हो रही है वर्तमान समय में युद्ध व्यय बहुत अधिक बढ़ गया है साथ ही दिन प्रतिदिन व्यय नये विभाग खोलती जा रही है जिनसे व्यय में बढ़ोत्तरी हो गई है।

② सुरक्षा पर बढ़ता हुआ व्यय (Increasing expenditure on defence)
वर्तमान समय में प्रत्येक राष्ट्र का सुरक्षा व्यय बढ़ रहा है वैज्ञानिक आविष्कारों ने इस व्यय को और अधिक बढ़ा दिया है। "टेलर" ने सुरक्षा के बढ़ते हुए कारणों को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि "सैनिक कला एवं विज्ञान

Scanned with CamScanner

की इतनी तीव्र प्रगति हुई है कि युद्ध के यन्त्रों का क्रय अत्यन्त महँगा हो गया है। सरकार द्वारा युद्ध-पीड़ित व्यक्तियों और उनके परिवारों की देखभाल करने का तथा उनके भोजन, शिक्षा, पुनर्वास आदि का उत्तरदायित्व स्वीकार कर लेने के कारण सरकार की युद्ध सम्बन्धी लागत काफी बढ़ गई है। कारगिल युद्ध के बाद रक्षा व्यय में काफी वृद्धि हुई है वर्तमान में भारत पाकिस्तान शीत युद्ध के कारण सुरक्षा व्यय में 89,000 करोड़ रुपया खर्च होने का अनुमान 2006-2007 के बजट में है।

(3) आवश्यकताओं की सामूहिक सन्तुष्टि (Collective Satisfaction of wants) - प्राचीन काल में सरकार का सामाजिक सुरक्षा सम्बन्धी कार्य क्षेत्र बहुत सीमित था। परन्तु वर्तमान समय में सरकार सामूहिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने लगी है। जैसे जलपूर्ति, सामाजिक बीमा योजना, यातायात आदि।

(4) राज्य की कल्याणकारी योजनाओं में वृद्धि (Increase in State Welfare Activities) - वर्तमान समय में बढ़ती हुई जनसंख्या व बढ़ते हुए नगरीकरण के कारण कल्याणकारी योजनाओं में वृद्धि हो रही है। सरकार श्रमिकों का आर्थिक स्तर उठाना चाहती है। इसकेलिए वह बेकारी बीमा, प्रसव लाभ, बीमारी बीमा, वृद्धावस्था पेन्शन जैसी व्यवस्थाओं को लागू करती है। इन कार्यक्रमों से सरकारी व्यय में वृद्धि होने लगती है।

(5) उद्योगों का राष्ट्रीयकरण (Nationalisation of Industries) वर्तमान समय में विशेषकर विकासशील राष्ट्रों ने तो विकास के लिए समाजवादी विकल्प भी ढूंढ लिया है। इन राष्ट्रों में अधिकांश उद्योगों को सरकार अपने हाथ में ले लिया है इस प्रकार नये उद्योगों को खोलने व पुराने उद्योगों को अपने अधिकार में लेने से सरकारी व्यय में अधिक वृद्धि होने लगी है,

(6) आर्थिक स्थिरता सम्बन्धी व्यय (Expenditure to maintain economic Stability) अनियंत्रित अर्थव्यवस्था में उतार-चढ़ाव आते है। इन उतार चढ़ावों के कारण अव्यवस्था उत्पन्न हो जाती है। इसे व्यवस्थित करने के लिए सरकार अनेक प्रयत्न करती है जैसे - अवसाद काल में नयी योजनाओं पर व्यय करके रोजगार स्तर में वृद्धि करना। मुद्रा प्रसार व

Scanned with CamScanner

मूल्य वृद्धि के कारण वस्तुओं की कीमत को नियंत्रित करना आदि इन सभी कार्यों में सरकार के व्यय बढ़ जाते हैं।

(7) आर्थिक सहायता (Economic Assistance) - आज राष्ट्रों के बीच आपसी सहयोग बढ़ता जा रहा है। प्राकृतिक आपदाओं वा युद्ध आदि के समय एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को आर्थिक सहायता प्रदान करता है इस प्रकार के सहयोग से भी सार्वजनिक व्यय में वृद्धि होने लगती है।

(8) आर्थिक नियोजन (Economic Planning) रूस के आर्थिक नियोजन की सफलता ने दुनिया के राष्ट्रों को प्रभावित किया है। आज 20वीं सदी में विश्व का प्रत्येक राष्ट्र आर्थिक नियोजन सम्बन्धी कार्यक्रम को अपनाने लगा है जिसके कारण सरकारी व्यय में वृद्धि होने लगी है।

(9) जनसंख्या में वृद्धि (Increase in Population) - सार्वजनिक व्यय में वृद्धि का एक महत्वपूर्ण कारण जनसंख्या वृद्धि रहा है। बढ़ी हुई जनसंख्या के सुख और सुविधाओं के लिए सरकार को काफी मात्रा में व्यय करना पड़ता है।

(10) कृषि विकास (Development of Agriculture) - भारत जैसे विकासशील देश की अर्थव्यवस्था का कृषि विकास उसकी अर्थव्यवस्था के विकास की धुरी होती है। आर्थिक विकास के लिए कृषि तथा गैर-कृषि दोनों क्षेत्रों के विकास के लिए सुविधाएं प्रदान करनी आवश्यक होती है क्योंकि दोनों क्षेत्र परस्पर निर्भर करते हैं। सरकार किसानों को कम ब्याज दर पर ऋण प्रदान करना, सिंचाई को अनुदान, कृषिगत वस्तुओं का निर्धारित मूल्य पर क्रय, तटकर सुविधा प्रदान करना इत्यादि सुविधाओं पर व्यय करती है। इसके अतिरिक्त सरकार कृषि अनुसन्धान एवं कृषिगत साधनों के निर्माण पर काफी मात्रा में व्यय करती है।

इस प्रकार वर्तमान में सामाजिक कल्याण, सुरक्षा एवं आर्थिक स्तर को ऊंचा करने के लिए सरकार को काफी मात्रा में व्यय करना पड़ता है।

Dr Sandhya Rani
Dept of Economics
Maharaja College.

Scanned with CamScanner